BA - I
Paper - II
Unite - 4

Dr Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani, (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID :- rajgopal7755@gmail.com.

Topic :⇒ Spinoza : Modes
(स्पिनोजा : विकारों या पर्यायों का सिद्धान्त)

स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य के कुछ अनिवार्य गुणों के अतिरिक्त कुछ आगंतुक धर्म भी होते हैं। ये आगंतुक धर्म द्रव्य के नित्य लक्षण नहीं है। इसी को द्रव्य का पर्याय या विकार कहते हैं। इनका अस्तित्व द्रव्य सापेक्ष है। द्रव्य के बिना इनका ज्ञान नहीं हो सकता है। यह द्रव्य पर आश्रित है। जहाँ द्रव्य स्वतंत्र है वहीं पर्याय परतंत्र है। पर्याय द्रव्य के आगंतुक लक्षण है। ये गुणों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है।

स्पिनोजा द्रव्य के अस्तित्व एवं सार तत्व को एक मानते हैं। वहीं विकारों के अस्तित्व एवं सार तत्व को एक दूसरे से भिन्न मानते हैं। जहाँ द्रव्य एक और अद्वितीय है, वहीं विकार अनेक है। द्रव्य नित्य, असीम, पूर्ण, उद्भव और विनाश से रहित एवं सामान्य है। इसके विपरीत विकार अनित्य, सीमित, अपूर्ण, उत्पन्न एवं विनाशवान तथा विशेष है। स्पिनोजा द्रव्य को नित्य एवं विकारवान दोनों मानता है। जैसे - सूर्य की उपस्थिति मात्र से प्रकाश की किरणों का निकलना स्वाभाविक है। उसी प्रकार से द्रव्य से विकारों का होना तार्किक रूप से प्रमाणित है।

स्पिनोजा ईश्वर को एक, नित्य, अद्वितीय, स्वतंत्र व अपरिणामी मानता है। वहीं दूसरी ओर विश्व को अनित्य, अनेक एवं

Scanned with CamScanner

परिणामी मानता है। इन्हीं दो विरोधी गुणों में समन्वय स्थापित करने के लिए स्पिनोजा ने विचार सिद्धान्त को अपनाया है। ईश्वर एक तथा अनंत होते हुए भी पर्यायों के माध्यम से विश्व में अभिव्यक्त होता है। विश्व की सभी सीमित एवं अनित्य वस्तुएँ पर्याय हैं। पर्याय द्रव्य के रूपान्तरण मात्र है इसलिए द्रव्य से अलग उसकी कोई सत्ता नहीं है। जिस प्रकार सागर से अलग उसके तरंगो, लहरों तथा ज्वारभाटा का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता है, उसी प्रकार से द्रव्य से अलग पर्याय का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता है। जिस प्रकार से असीम देश कभी त्रिभुज कभी वृत के आकार में अभिव्यक्त होता है उसी प्रकार से द्रव्य या ईश्वर पर्यायों के रूप में अभिव्यक्त होता है। विश्व में नाना प्रकार की विविधताएँ हैं, इन्हीं विविधताओं को स्पिनोजा पर्याय के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

स्पिनोजा के अनुसार पर्याय के दो प्रकार होते हैं।
(i) असीम पर्याय (ii) ससीम पर्याय

(i) असीम पर्याय :- यह पर्याय अनन्त ईश्वर का स्वरूप होने के कारण असीम और निरपेक्ष है। यह वह पर्याय है जिससे द्रव्य के गुणों का अनिवार्य रूपान्तरण होता है। असीम पर्याय सभी विशिष्ट तथा ससीम पदार्थों का सामान्य धर्म होता है।

(ii) ससीम पर्याय :- ससीम पर्याय पर्याय का वह रूप है जिसकी कल्पना असीम से ससीम की सृष्टि करवाने हेतु की जाती है। विशिष्ट विचार एवं वस्तुओं को ससीम पर्याय कहा जाता है। यह सीमित अस्थायी एवं परिवर्तनशील होता है। ससीम पर्यायों के समूह को सम्पूर्ण जगत का स्वरूप कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

पर्यायों के अन्तर्गत द्रव्य के गुणों के असीम और ससीम दोनों रूप समाहित हैं। ईश्वर के स्वरूप के रूप में पर्याय असीम और नित्य है। व्यक्तिगत रूप में पर्याय अनित्य एवं ससीम है। चेतना के रूप में बुद्धि एवं संकल्प नित्य विकार हैं। किन्तु विविध जीवों के रूप में सीमित एवं अनित्य हैं। विस्तार के रूप में गति एवं स्थिति नित्य विकार हैं किन्तु जड़ पदार्थों के रूप में सीमित एवं अनित्य हैं। इतना विरोधाभास के बावजूद दोनों रूपों में कोई अन्तर्विरोध नहीं है, क्योंकि व्यष्टि और समष्टि दोनों का आश्रय द्रव्य है। प्रत्येक विकार सत्य है क्योंकि उनमें एक ही द्रव्य का प्रकाश है। ईश्वर न केवल अस्तित्ववान वस्तुओं का कारण है, बल्कि उनके शाश्वत रूप से अस्तित्व में बने रहने का भी आधार है। इस प्रकार से नित्य स्वरूप ईश्वर एवं अनित्य स्वरूप विश्व के विभिन्न पदार्थ पर्यायों के द्वारा आलोकित होता है। निराकार ईश्वर पर्यायों के माध्यम से विश्व में प्रतीत होता है। अतः एक से अनेक, असीम से ससीम की व्याख्या के लिए पर्याय को मानना आवश्यक है।

सभी विकारों का अंतिम कारण द्रव्य है। द्रव्य (ईश्वर) निरपेक्ष है। जबकि सीमित वस्तु काल सापेक्ष है। इस कारण एक सीमित वस्तु दूसरे अस्तित्ववान वस्तुओं के द्वारा ही सीमित होती है। द्रव्य की नित्यता के कारण उसका काल के साथ संबंध असंगत है। प्रत्येक विकार अनिवार्य रूप से अपने पूर्ववर्ती विकारों से फलित होते हैं, अन्ततः सारे विकार ईश्वर में समाहित हो जाते हैं। ईश्वर काल निरपेक्ष है जबकि विकार काल सापेक्ष है। ईश्वर का संबंध प्रत्ययों की आपसी संबंधों से है। दोनों में समन्वय समानान्तरवाद सिद्धान्त के आधार पर होता है।

Scanned with CamScanner

वैचारिक विकारों की श्रृंखला के समानान्तर वैस्तारिक विकारों की श्रृंखला का प्रतिपादन होता है।

स्पिनोजा के विकारों के सिद्धान्त के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि- वे विकारों के आधार पर ही नित्य, एक, अपरिणामी एवं स्वतंत्र द्रव्य से अनित्य, अनेक, परिणामी एवं परतंत्र विश्व की व्याख्या करते हैं। स्पिनोजा की नित्य दृष्टि एवं अनित्य दृष्टि वेदान्त दर्शन के पारमार्थिक सत्ता एवं व्यवहारिक सत्ता के समान है। वे नित्य दृष्टि से एक द्रव्य की सत्ता को मानते हैं। वहीं अनित्य दृष्टि से विश्व की अनेक जीवों एवं वस्तुओं में विकारों की अनेकता के आधार पर उनकी सत्ता को मानते हैं। इस प्रकार से स्पिनोजा के दर्शन का आरंभ एक द्रव्य से हुआ एवं उसका अंत विकारों की अनेकता से हुआ। इसलिए हेगेल ने कहा है कि "स्पिनोजा का स्थान उस सिंह के गुफा के समान है, जहाँ अनेक जानवरों को अंदर जाने का पदचिन्ह दिखाई पड़ता है किन्तु उसके बाहर आने का कोई पदचिन्ह दिखाई नहीं पड़ता है।" इसका अर्थ है विकारों से द्रव्य का अस्तित्व सिद्ध होता है परन्तु द्रव्य से विकारों का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता है। इस प्रकार से स्पिनोजा विकारों की तार्किक व्याख्या नहीं कर पाते हैं। फिर भी परवर्ती दार्शनिकों हेगेल, कुनो, आदि ने स्पिनोजा के विकार सिद्धान्त का आलोचना किया है इससे इसकी सार्थकता सिद्ध है।

Scanned with CamScanner